चरित्र चित्रण

नाटक में प्रयुक्त पात्रों के विचार कार्यप्रणाली उनके स्वभाव एवं स्वरूप के बारे में वर्णन करना, उस पात्र का चरित्र चित्रण कहलाता है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के नायक दुष्यन्त, नायिका शकुन्तला एवं महर्षि कण्व का चरित्र चित्रण इस प्रकार है–

दुष्यन्त–अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नायक पुरूवंशोत्पन्न के राजा दुष्यन्त हैं। दुष्यन्त धीरोदात्त नायक है दशरूपककार **आचार्य धनंजय** ने धीरोदात्त का लक्षण किया है–

महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः। स्थिरो निगूढाहंकारो धीरोदात्तो दृढ़व्रतः॥

आदर्श राजा–दुष्यन्त एक आदर्श, पराक्रमी एवं कर्मव्यनिष्ठ राजा हैं। वह अपनी प्रजा के साथ-साथ तपोवन की रक्षा में भी तत्पर रहता है। भ्रमर द्वारा पीड़ित शकुन्तला के सहायतार्थ पुकारे जाने पर वह कहता है कि पुरूवंशियों के शासक होने पर कौन अविनय का आचरण करता है? राजा दुष्यन्त अपनी प्रजा से उचित कर ही ग्रहण करता है। विदूषक जब उससे तपस्वियों से कर लेने को कहता है तो वह कहता है कि वह तपस्वी तो मुझे विशेष प्रकार का कर देते हैं। सामान्य प्रजा से प्राप्त कर तो नष्ट हो सकता है किन्तु तपस्वी हमें अपनी तपस्या का छठा भाग प्रदान करते हैं जिसका कभी भी विनाश नहीं होता है। दुष्यन्त की वीरता भी प्रशंसनीय है उसकी वीरता के कारण ही इन्द्र उसे दानवों से युद्ध करने के लिए बुलाते हैं।

आकर्षक व्यक्तित्व—दुष्यन्त सुन्दर हृष्ट पुष्ट एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला युवक है। उसका शारीरिक गठन एवं सौन्दर्य सभी को प्रभावित कर देता है। दुष्यन्त को देखकर ही प्रियंवदा कहने लगती है—

'चतुरगम्भीराकृतिर्मधुरं प्रियमालपन् प्रभाववानिव लक्ष्यते।'

आदर्श प्रेमी—दुष्यन्त एक आदर्श प्रेमी है। मालिनी नदी के किनारे वेतस् कुंजों में शकुन्तला को देखकर वह अत्यन्त प्रसन्न हो जाता है और कहता है कि **'अधे लब्ध नेत्र निर्वाणम्'**। षष्ठ अंक में मुद्रिका के प्राप्त हो जाने पर वह निरन्तर शकुन्तला को स्मरण करता हुआ पश्चाताप की अग्नि में जलता है। नाटक के आरम्भ में दुष्यन्त एक कामुक व्यक्ति के रूप में उपस्थित होता है किन्तु नाटक के अन्त तक उसका प्रेम पवित्रता की चरम सीमा को प्राप्त करता है। शकुन्तला से प्रेम करने के कारण वह मृगों को नहीं मारता है क्योंकि शकुन्तला को मृगों ने मुग्ध विलोकन का उपदेश दिया वह उसे अत्यन्त प्रिय है। उसके क्रोध को शान्त करने के लिए वह उसके पैरों पर गिरता है।

चित्रकला प्रेमी—दुष्यन्त एक अच्छा चित्रकार भी है। उसके द्वारा बनाये गये शकुन्तला के चित्र को देखकर सानुमती मुग्ध हो जाती है और कहती है **'अहो! एषा राजर्षेर्निपुणता।'** शकुन्तला और उसकी सखियों के चित्र को बार-बार तूलिका से ठीक करते हुए भी वह सन्तुष्ट नहीं होता है।

संगीतज्ञ—दुष्यन्त संगीत मर्मज्ञ भी है। महारानी हंसपादिका के गीत को सुनकर वह कहने लगता है कि 'अहो रागपरिवाहिनी गीति'। यह सुनकर विदूषक आश्चर्यचकित होता है। राजा हसकर कहता है कि महारानी हंसपादिका ने शिष्टतापूर्वक उपालम्भ दिया है।

विनीत एवं मृदुभाषी—दुष्यन्त अत्यन्त विनम्र एवं मधुरभाषी है। प्रियंवदा उसके मधुर भाषण की भूरि-भूरी प्रशंसा करती है। तपोवन में ऋषियों के द्वारा आखेट के लिए मना किये जाने पर वह उनकी आज्ञा को विनम्रता से स्वीकार कर लेता है। तपोवन में वह राजसी वेषभूषा में प्रवेश न करके सामान्य जन की तरह प्रवेश करता है यह उसकी विनम्रता का परिचायक है।

वात्सल्य हृदय—सन्ताहीन होने पर भी मारीच के आश्रम में सिंह शावक के साथ खेलते हुए बालक को देखकर दुष्यन्त का हृदय पुत्र प्रेम से भर उठता है। राजा को बालक अत्यन्त प्रिय लगता है और वह कहता है कि वह अत्यधिक भाग्यशाली लोग होते हैं जिनकी गोद बालकों के रजकणों से मलिन होती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दुष्यन्त एक श्रेष्ठ राजा, आदर्श प्रेमी, ललित कलाओं का ज्ञाता, विनम्र मृदुभाषी, पराक्रमी नायक है।

शकुन्तला—शकुन्तला अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की नायिका हैं। वह विधाता की अपरा सृष्टि है। वह विश्वामित्र और मेनका की पुत्री है। उसका पालन पोषण महर्षि कण्व के द्वारा तपोवन के प्राकृतिक वातावरण में किया गया है। अतः कश्यप उसे पुत्री मानते हैं और वह भी कश्यप को ही अपना पिता मानती है। वह अनुपम सुन्दरी है तथा आदर्श गुणों से युक्त है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

अप्रतिम सुन्दरी—शकुन्तला का सौन्दर्य अनिर्वचनीय है। उसके अलौकिक सौन्दर्य से आकृष्ट होकर दुष्यन्त कहता है कि 'मानषीषु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः'। उसका शरीर स्वाभाविक रूप से ही मनोहर है **'इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः'** उसका शरीर लता के वैशिष्ट्य से युक्त है—

"अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमंगेषु सन्नद्धम्॥"

शकुन्तला बल्कल वस्त्रों में भी अत्यधिक सुन्दर प्रतीत होता है सत्य ही कहा गया है। सुन्दर वस्तुओं को किसी अलंकरण की आवश्यकता नहीं होती है **'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतिर्नाम'**।

प्रकृति प्रेम—शकुन्तला और प्रकृति एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं। वह प्रकृति की गोद में पली बढ़ी है। प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों के प्रति उसका स्वाभाविक अनुराग है। वह वृक्ष सिंचन से पहले स्वयं जल नहीं पाता है आभूषण प्रिय होने पर भी वह उनके पत्तों को नहीं तोड़ता है और इनमें पहली बार फूल आने पर वह उत्सव मनाती है। इसी कारण महर्षि कण्व शकुन्तला की विदाई के समय आश्रम के वृक्षों एवं लताओं से कहते हैं कि शकुन्तला अपने पतिगृह जा रही है तुम सब इसको आज्ञा दो।

मुग्धा नायिका—शकुन्तला मुग्धा नायिका है। राजा दुष्यन्त उसको देखकर कहते हैं कि "मुग्धासु तपस्विकन्यासु"। दुष्यन्त के प्रति उत्पन्न प्रेम को वह संकोच वश अपनी प्रिय सखियों से भी व्यक्त नहीं कर पाती

है। राजा के द्वारा प्रणयानुरोध करने पर भी वह लज्जावश तथा अपने पिता की अनुमति के बिना आत्मसमर्पण करने के लिए उद्यत नहीं होती है।

आदर्श सखी—शकुन्तला का चरित्र एक आदर्श सखी का है। अपनी सखियों के परिहास करने पर वह बुरा नहीं मानती है और वह उसे कोई बात छिपाती नहीं है। अनुसूया और प्रियंवदा से परामर्श करके ही वह कोई कार्य करती है। दुष्यन्त के द्वारा परिणय के लिए आग्रह करने पर वह कहती है कि मुझे सखियों से पूछ लेने दीजिए। शकुन्तला के आश्रम से विदाई के पश्चात् दोनों सखियाँ व्याकुल हो जाती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि वह एक आदर्श सखी है।

पतिव्रता नारी—शकुन्तलता उच्चकोटि की पतिव्रता पत्नी है। दुष्यन्त का वियोग उसके लिए असहनीय है। दुष्यन्त के अपने राज्य वापस चले जाने पर वह सुध वुध खो बैठती है। पंचम अंक में दुष्यन्त के द्वारा ना पहचाने जाने पर भी वह उससे विमुख नहीं होती है। वह दुष्यन्त को दोष न देकर अपने भाग्य को दोष देती है। मारीच के आश्रम में वह एक तपस्विनी की भाँति रह कर अपने चरित की रक्षा करती है। उसकी इस तपस्या के परिणामस्वरूप उसका अपने पति से मिलन होता है। वह पैरों में गिरकर क्षमा माँगता है तथा आदरपूर्ण अपनी राजधानी से ले जाता है।

वात्सल्यमयी—शकुन्तला नारी है उसका हृदय वात्सल्य से परिपूर्ण है। एक मृगशावक जिसकी माँ जन्म के पश्चात् मर गई उसको शकुन्तला ने सांवा खिलाकर पुत्रवत् पाला है। वह एक आदर्श माँ है उसने एक अत्यन्त पराक्रमी चक्रवर्ती पुत्र को जन्म दिया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि शकुन्तला के रूप में कालिदास ने एक आदर्श भारतीय नारी का प्रेममय चित्र अंकित किया है और इसमें वह पूर्ण रूप से सफल हुए हैं।

कण्व—महर्षि कण्व के चरित्र अनुकरणीय एवं आदर्श चरित है। उनको 'कश्यप' नाम से भी जाना जाता है। वह एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा महापुरुष हैं। उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

आश्रम के कुलपति—मालिनी नदी के तट पर एक विशाल आश्रम है। उसके कुलपति महर्षि कण्व हैं।

महान तपस्वी—महर्षि कण्व अग्निहोत्री हैं। अपनी तपस्या के प्रभाव से ही वह शकुन्तला के प्रतिकूल भाग्य को जानकर उसकी शान्ति हेतु सोमतीर्थ जाते हैं। महर्षि कण्व के आश्रम में यज्ञशाला है वह श्रौतविधि में हवन करने वाले हैं। कण्व ऋषि के तप के प्रभाव से ही पति के घर जाती हुई शकुन्तला को आश्रम के वृक्ष वस्त्र और आभूषणादि प्रदान करते हैं।

वात्सल्य हृदय—यद्यपि शकुन्तला कण्व की धर्मसुता है तथापि वह उसे अपनी कन्या से भी अधिक प्रेम करते हैं। तपस्वी होकर भी उनका हृदय वात्सल्य रस से परिपूर्ण है। शकुन्तला की विदाई के अवसर पर वह एक गृहस्थ से भी अधिक व्याकुल होकर सामान्य पिता की भाँति रुदन करते हैं—

"यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदय सस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृतिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्य मम तावदीदृशमिद स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथ नु तनयाविश्लेषदुःखैनबैः॥"

शोकाकुल होकर वह अनुसूया एवं प्रियंवदा से कहते हैं कि—'अनुसूये! प्रियंवदे गता वां सहचरी।'